

Bihar Board Class 10th Hindi Notes गद्य Chapter 9 आविन्यों

आविन्यों लेखक परिचय

अशोक वाजपेयी का जन्म 16 जनवरी 1941 ई० में दुर्ग, छत्तीसगढ़ में हुआ, किंतु उनका 'मूल निवास सागर, मध्यप्रदेश है। उनकी माता का नाम निर्मला देवी और पिता का नाम परमानंद वाजपेयी है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गवर्नमेंट हायर सेकेंड्री स्कूल, सागर से हुई। फिर सागर विश्वविद्यालय से उन्होंने बी० ए० और सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली से अंग्रेजी में एम० ए० किया। उन्होंने वृत्ति के रूप में भारतीय प्रशासनिक सेवा को अपनाया। वे भारतीय प्रशासनिक सेवा के कई पदों पर रहे और महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति पद से सेवानिवृत्त हुए। संप्रति, वे दिल्ली में भारत सरकार की कला अकादमी के निदेशक हैं।

अशोक वाजपेयी की लगभग तीन दर्जन मौलिक और संपादित कृतियाँ प्रकाशित हैं। 'शहर अब भी संभावना है', 'एक पतंग अनंत में', 'तत्पुरुष', 'कहीं नहीं वहीं', 'बहुरि अकेला', 'थोड़ी सी जगह', 'दुख चिट्ठीरसा है' आदि उनके कविता संकलन हैं। 'फिलहाल', 'कुछ पूर्वग्रह', 'समय से बाहर', 'कविता का गल्प', 'कवि कह गया है' आदि उनकी आलोचना की पुस्तकें हैं। उनके द्वारा संपादित पुस्तकों की सूची भी लंबी है – 'तीसरा साक्ष्य', 'साहित्य विनोद', 'कला विनोद', 'कविता का जनपद', 'मुक्तिबोध, शमशेर और अज्ञेय की चुनी हुई कविताओं का संपादन आदि। उन्होंने कई पत्रिकाओं का भी संपादन किया है जिनमें 'समवेत', 'पहचान', 'पूर्वग्रह', 'बहुवचन' 'कविता एशिया', 'समास' आदि प्रमुख हैं। अशोक वाजपेयी को साहित्य अकादमी पुरस्कार दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान, फ्रेंच सरकार का ऑफिसर आर्द आर्डर आर्द क्रॉस 2004 सम्मान आदि प्राप्त हो चुके हैं।

सर्जक साहित्यकार अशोक वाजपेयी द्वारा रचित प्रस्तुत पाठ में एक संश्लिष्ट रचनाधर्मिता की अंतरंग झलक है। यह पाठ उनके 'आविन्यों' नामक गद्य एवं कविता के सर्जनात्मक संग्रह से संकलित है। इसी नाम के संग्रह में उनकी सर्जनात्मक गद्य की कुछ रचनाएँ और कविताएँ हैं जिनमें से दोनों विधाओं की दो रचनाओं के साथ पुस्तक की भूमिका भी किंचित संपादित रूप में यहाँ प्रस्तुत है। आविन्यों दक्षिणी फ्रांस का एक मध्ययुगीन इसाई मठ है जहाँ लेखक ने बीस-एक दिनों तक एकांत रचनात्मक प्रवास का अवसर पाया था।

प्रवास के दौरान लगभग प्रतिदिन गद्य और कविताएँ लिखी गईं। इस तरह हिंदी ही नहीं, भारत से भिन्न स्थान और परिवेश के एकांत प्रवास में एक निश्चित स्थान और समय से अनुबद्ध मानस के सर्जनात्मक अनुष्ठान का साक्षी यह पाठ एक वैश्विक जागरूकता और संस्कृतिबोध से परिपूर्ण रचनाकार के मानस की अंतरंग झलक पेश करते हुए यह दिखाता है कि रचनाएँ कैसे रूप-आकार ग्रहण करती हैं। कोई भी रचना महज एक शब्द व्यवस्था भर नहीं होती, उसकी निर्माण प्रक्रिया में रचनाकार की प्रतिभा, उसके जटिल मानस के साथ स्थान और परिवेश की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है।

आविन्यों Summary in Hindi

पाठ का सारांश

लगभग दस बरस पहले पहली बार आविन्यों गया था। दक्षिण फ्रांस में रोन नदी के किनारे बसा एक पुराना शहर है जहाँ कभी कुछ समय के लिए पोप राजधानी थी और अब गर्मियों में फ्रांस और यूरोप का एक अत्यन्त प्रसिद्ध और लोकप्रिय रंग-समारोह हर बरस होता है। उस बरस वहाँ भारत केन्द्र में था। पीटर ब्रुक का विवादास्पद 'महाभारत'

पहले पहल प्रस्तुत किया जानेवाला था और उन्होंने मुझे निमंत्रण भेजा था।

रोन नदी के दूसरी ओर आविन्यों का एक हिस्सा है जो लगभग स्वतंत्र है। नाम है वीलनवल आविन्यों-वहाँ दरअसल फ्रेंच शासकों ने पोप की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए किला बनवाया था। उसी में काथूसियन सम्प्रदाय का एक ईसाई मठ बना ला शत्रूज। चौदहवीं सदी से फ्रेंच क्रांति तक उसका धार्मिक उपयोग होता रहा। अब इसमें एक कलाकेन्द्र स्थापित है। यह केन्द्र इन दिनों रंगमंच और लेखन से जुड़ा हुआ है।

मेरा प्रवास वहाँ उन्नीस दिन का था, 24 अक्टूबर से 10 नवम्बर 1994 की दोपहर तक। कुल उन्नीस दिनों में पैंतीस कविताएँ और सत्ताईस गद्य रचनाएँ लिखी गईं। आविन्यों फ्रांस का एक प्रमुख कलाकेन्द्र रहा है। पिकासो की विख्यात कृति का शीर्षक है 'लमादामोजेल द आविन्यों'

प्रतीक्षा करते हैं पत्थर

किसी देवता या काल की नहीं पता नहीं किसकी प्रतीक्षा करते हैं पत्थर-धीरज से रेशा-रेशा झिरते हुए, शिरा-शिरा घिलते हुए, प्रतीक्षारत रहते हैं एन्थर। बिना शब्द कविता लिखते हैं, पत्थर। पता नहीं किसकी प्रतीक्षा करते हैं पत्थर।

नदी के किनारे भी नदी है ।

यहाँ पास में ही रोन नदी है। इस तरफ वीलनवल और दूसरी ओर आविन्यों। तट पर बैठो तो कई बार लगता है कि जल स्थिर है और तट ही बह रहा है। नदी तट पर बैठना भी नदी के साथ बहना है; कई बार नदी स्थिर होती है, हम तट पर बैठे रहते हैं। नदी के पास होना नदी होना है। नदी किसी को अनदेखा नहीं करती, वह सबको भिगोती है, अपने साथ करती है। उसी प्रकार कविता में हम बरबर ही शामिल हो जाते हैं।

शब्दार्थ

- महाकाव्यात्मक : महाकाव्य की तरह व्यापक और गहरा
- रंगस्थल : जहाँ नाटक मंचित हो
- द्रुम : पेड़-पौधा
- स्थापत्य : वास्तु-रचना, भवन-निर्माण की कला
- जीर्णोद्धार : पुराने को नया करना
- सुघर : सुंदर
- चैम्बर्स : प्रकोष्ठ, कमरे
- नीरव : शब्दहीन, ध्वनिहीन
- निपट : नंगा, निरा, स्पष्ट
- निविद : घना, संघन
- आसक्ति : गहरा भावात्मक लगाव
- दस्तावेज : ऐसे कागजात जिनमें किसी वस्तु का सारा विवरण हो
- कविप्रणति : कवि का कृतज्ञतापूर्ण प्रणाम
- बियाबान : निर्जन, सुनसान
- बेहद्दी चौगान : सीमाहीन खुला मैदान
- तदाकार : किसी वस्तु के आकार में ढल जाना
- अभिभूति : पराजय, अत्यंत प्रभावित होना ।

- नश्वरता : भंगुरता, नाशशीलता

evidyarthi